अपना लेता है। अपना परिजन बना लेता है। साथ ही सम्मानसूचक संज्ञा देता है। दादा, नाना आदर प्रगट करने और आत्मीयता जताने वाला संबोधन है। यह संबोधन विशेषण का दर्ज़ा प्राप्त कर लेता है और मूल नाम की जगह स्थापित हो जाता है। नानाजी ऐसा ही विशेषण है जो संज्ञा चंडिकादास को विस्थापित कर लोगों की जुबान पर बस गया। आलम यह कि हमें स्मृति पर ज़ोर देना पड़ता है, नानाजी देशमुख का वास्तविक नाम क्या है। माता-पिता के दिए नाम को समाज-प्रदत्त नाम ने विस्मृत बना दिया। यह सामाजिक स्वीकृति एवं कर्म-कीर्ति का सुंदर परिणाम है और प्रमाण भी।

पिलानी की एक घटना उल्लेखनीय है, जिसके माध्यम से ज्ञात होता है कि भविष्य में चंडिकादास सामाजिक कर्म में संलिप्त होंगे। कालेज के संस्थापक सेठ घनश्याम दास बिड़ला चंडिका दास की योग्यता, कर्मठता, आत्मविश्वास और विश्वसनीयता से प्रभावित होकर प्राचार्य सुखदेव पांडेय से बताया कि मैं इस युवक को अपना निजी सहायक बनाना चाहता हूँ। इस एवज में उसे प्रतिमाह अस्सी रुपए वेतन एवं भोजन आवास की सुविधा देने की इच्छा जताई। चंडिका दास की आर्थिक स्थिति एवं उस देश-काल के लिहाज़ से यह प्रस्ताव आकर्षक था। पर उन्होंने बिड़ला का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। दरअसल उनके मन में भावी जीवन की रूपरेखा तय होने लगी थी। देश, समाज की सेवा के मार्ग पर चलना इन्होंने निश्चय कर लिया था, जिसे निकट भविष्य में पूर्णतया निभाना था।

सन 1940 में चंडिकादास संघ की प्रथम वर्ष शिक्षा के लिए नागपुर गए। वहाँ डॉ. हेडगेवार का अंतिम भाषण सुना। परिणामस्वरूप तय कर लिया कि आगे पढ़ाई नहीं करनी है और पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य करना है। डॉ. हेडगेवार के अलावा बाबा साहेब आप्टे से भी वे बेहद प्रभावित थे। इसलिए इन्होंने आप्टे साहब से अपने लिए कार्य पूछा। आप्टे साहब ने इन्हें भाऊ जुगादे के साथ आगरा शहर में संघ कार्य के लिए भेज दिया। तब इनकी उम्र चौबीस साल थी। इसी दौरान पं. दीनदयाल उपाध्याय कानपुर से बी.ए. पास कर एम.ए. की पढ़ाई के लिए आगरा आए थे। दीनदयाल जी भी संघ के एक अच्छे कार्यकर्ता बन चुके थे। अत: आगरा में तीनों कार्यकर्ता एक कमरे में रहने लगे। साथ रहने से इनकी दोस्ती प्रगाढ़ हुई, जो जीवनभर क़ायम रही। आगरा में कुछेक महीना रहने के बाद चंडिकादास को गोरखपुर भेजा गया। वे अपने कार्य में जुटे रहे। देश आज़ाद हुआ पर साथ ही इसके दो टुकड़े भी हुए। भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में गहरा तनाव व्याप्त था। 30 जनवरी 1948 को हत्यारे नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी। नानाजी देशमुख पर आरोप लगा कि इन्होंने महंथ दिग्विजयनाथ से नाथूराम गोडसे की मुलाक़ात कराई और पिस्तौल दिलवाई। परिणामत: नानाजी गिरफ़्तार कर लिए गए। जेल से छूटने के पश्चात वे लखनऊ आ गए। यहाँ रहते हुए उनका जीवंत संपर्क गोरखपुर के कार्यकर्ताओं से बना रहा। वे कार्यकर्ताओं के दु:ख-सुख में भी